आभार

ओउम् भूर्भूवः स्वः।
तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

कठिन परिश्रम एवं अपार उत्साह से सम्पन्न किये गये प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का श्रेय परम उदार कृपानिधि आराध्य श्रीजुगल किशोर की अनुकम्पा से मेरे पूज्य माता–पिता श्री सुनीता–अशोक भट्ट के साथ स्वर्गीय दादा–दादी एवं नाना–नानी को मानती हूँ, जिनसे प्राप्त संस्कार, स्नेह प्रोत्साहन, मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद के कारण आज स्वयं को शिक्षा के इस सोपान पर पा रही हूँ। साथ ही प्रिय कु. संगीता का स्नेह भी अविस्मरणीय रहेगा।

तत्पश्चात् मैं अपनी शोध निर्देशिका जिनको हम आदर से ईना दीदी कहते हैं, श्रद्धे, प्रोफेसर ईना शास्त्री की हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोध प्रारम्भ से पूर्ण होने तक न केवल कुशल निर्देशन एवं शोध परक दृष्टि से ही शोध कार्य को सम्पन्न कराया वरन् अपने सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से भी शोध प्रक्रिया में मेरी रूचि व उत्साह को बनाये रखने में मदद की।

अंत में दयामय भगवान श्रीकृष्ण की कृपा से सम्पादित इस कृति को श्रृद्धासरित उसी जुगल किशोर को समर्पित करती हूँ। साथ ही भविष्य में निरन्तर तथा कुछ करने की प्रेरणा की इच्छा रखती हूँ। प्रभु, सदैव मेरे साथ रहकर मुझपर कृपा बनाये रखेगा।

इसी आशा, विश्वास के साथ .....

ईशा भट्ट